

नववर्ष 2021 की मंगल कामनाओं के संग

पर्यावरण PERSPECTIVE

January 2021

Issue No-4

NOT FOR SALE

LET'S WORK FOR MOTHER NATURE

don't forget to visit

Corona Waste

एक पर्यावरणीय चुनौती

PAGE 15

लुप्त होती गैरिया

PAGE 18

Environment
Imparting Ethical Touch

23

www.PARYAVARANPERSPECTIVE.COM

Contents



04 संपादकीय: कोरोना, किसान और स्वास्थ्य

06 पंचम नदी महोत्सव: भारतीय चिंतन का वर्चस्व

08 'सृष्टि': एक अनूठी पहल

09 प्लास्टिक प्रदूषण: एक वैश्विक चुनौती

11 पर्यावरण संरक्षण: भारतीय ग्रंथ देती हैं पर्यावरण संदेश

13 जलवायु परिवर्तन: कोरोना, धुंध और विकास

15 CORONA WASTE: एक पर्यावरणीय खतरा

17 ईको ब्रिक्स: जीवन शैली का बना अभिन्न अंग

18 संरक्षण: लुप्त होती गैरैया

इस अंक में

19 RAJASTHAN: A LIVING LEGEND



Page 19

20 AFFORESTATION: SPREADING GREENERY



page 20

21 POLYTHENE: SEEKING POETIC JUSTICE



22 NIT HAMIRPUR: PROTECTING ENVIRONMENT



page 23

23 POLLUTION: IMPARTING ETHICAL TOUCH

24 UTTAM PUBLIC SCHOOL: LEAD KINDLY LIGHT

EDITOR-IN-CHIEF**Rajesh K Rajan****CONSULTING EDITOR****Dr. Atanu Mohapatra****EDITOR (ENGLISH)****Dr. Subhash Kumar****EDITOR (HINDI)****Ankur Vijaivargiya****EDITORIAL TEAM****Lokendra Singh****Dipti Sharma****Niyati Sharma****Kavita Mishra****CREATIVE & GRAPHICS HEAD****Alekha Sachidananda****Nayak**

कोरोना, किसान और स्वास्थ्य

प

र्यावरण Perspective अपने पाठकों को नववर्ष 2021 की मंगल कामनाएं प्रेषित करता है। ‘हर साल की तरह यह साल भी समृद्ध और सफल हो’ की कामना हालाँकि प्रथागत है, पर आने वाला साल कैसा होगा, यह हमेशा की तरह समय के गर्भ में रहता है। मसलन, वर्ष-2020 को ही ले लें! बीते वर्ष की शुरुआत अच्छी हुई थी, लेकिन उसके कैसी परिस्थितियां बनी हम सब जानते हैं। इस वर्ष में न केवल पिछले छह वर्षों में सबसे धीमी जीड़ीपी का रिकॉर्ड बना बल्कि महीना दर महीना आर्थिक दृष्टि से बद से बदतर होता चला गया।

2020 का जिक्र करते समय बरबस प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्यकार T S Eliot की पंक्तियाँ

“We are the hollow men. We are the stuffed men...”

“This is the way the world ends, Not with a bang but with a whimper”

याद आ जाती हैं, जो बीते साल को बखूबी चित्रित करती हैं।

नए साल-2021 में हम भी चीजों को अलग ढंग से करने की कोशिश करेंगे। हमने पर्यावरण PERSPECTIVE के पिछले सारे editions में पर्यावरण पर ही पूरा ध्यान केंद्रित रखा था और अभी भी है। पिछले संस्करणों की परंपरा, जो अपने पाठकों को संस्करण के अंदर की कहानियों की एक झलक दिखला कर प्रेरित करता रहा, से आगे बढ़ते हुए हमने इस नववर्ष के प्रारम्भिक संस्करण में अपने पाठकों के लिए बीते पूरे साल को संप्रेषित कर प्रस्तुत करने की कोशिश की है, जिसमें पिछले साल के महत्वपूर्ण और युग घटनाओं का वर्णन है। आशा करता हूँ कि यह अंक आप सब को पसंद आएगा।

10 जनवरी, 2020 को नागरिकता संशोधन अधिनियम लागू क्या हुआ, देश भर में आग लग गयी। तथाकथित बुद्धिजीवियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, समुदाय विशेष और विपक्षी दलों ने एकजुट होकर इस विरोध, प्रदर्शनों को जनांदोलन में बदलने का प्रयास किया। देश की राजधानी दिल्ली सहित देश के विभिन्न स्थान पर कानून व्यवस्था को बिगाढ़ने का काम किया। समाज में विभाजन के बीज बोने का काम किया। इन अतार्किक और अराजक प्रदर्शन की परिणिति दिल्ली दंगों के रूप में सामने आई।

ये आग बुझी भी नहीं थी कि COVID-19 महामारी हम सब पर टूट पड़ी। भारत में इस महामारी का पहला मामला केरल में 30 जनवरी 2020 को रिपोर्ट किया गया, जो चीन के वुहान से यात्रा कर लौटा था। भारत ने कोरोना संक्रमण के विरुद्ध अधिक सजगता, सक्रियता और एकजुटता से लड़ाई लड़ी, जिसकी सराहना वैश्विक संस्थाओं/संगठनों ने भी की। हालांकि, शुरुआती कुछ कोरोना मामलों की अनदेखी हमसे जरूर हुई। यहां तक कि मार्च की शुरुआती दिनों में न ICMR ने यात्रा के इतिहास के बिना COVID-19 लक्षणों का परीक्षण किया और न हम सबने अंतरराष्ट्रीय यात्रियों की screening की, जिसकी वजह से स्थिति अत्यधिक गंभीर होती चली गयी। हालांकि, तब तक कोई यह नहीं जानता था कि कोरोनावायरस महामारी एक Health Emergency है या होने वाला है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 22 मार्च, 2020 को जनता कफ्फू की घोषणा की और तब आधिकारिक तौर पर Social Distancing द्वारा वायरस को दूर रखने का एक तरीका सुझाया गया। तत्पश्चात्, National Lockdown आया और किसी scientific उपचार की गैरहाजिरी में पहली रोकथाम के उपाय के रूप में घोषित किया गया। तब तक COVID-19 मामले वैश्विक स्तर पर आसमान छूने लगे थे। महामारी के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था चरमराने

लगी। भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी COVID-19 का प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

यह वर्ष इसलिए भी सदैव याद रहेगा क्योंकि इस वर्ष रामलला जन्मभूमि को लेकर भारतीय समाज की वर्षों की प्रतीक्षा समाप्त हुई। श्रीराम मंदिर के पक्ष में सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय आया और भव्य मंदिर निर्माण की प्रक्रिया को तेज करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 5 अगस्त को अयोध्या में भूमिपूजन किया।

एक और अनोखी पहल 2020 की देन है। भारतीय मूल के श्री अनिल सोनी Geneva स्थित WHO Foundation के पहले CEO नामित किये गए। ज्ञात हो कि May 2020 में WHO Foundation को स्वतंत्र अनुदान देने वाली एजेंसी के रूप में घोषित किया गया था।

हालाँकि पूरा का पूरा 2020 कोरोना से जूझने में निकल गया और आर्थिक व्यवस्था को भारी क्षति पहुंची। नए साल 2021 की आधिकारिक पहल काफी

पूरे देश में जनवरी 2021 से राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन प्रारंभ हो जाएगा, जिसके तहत प्रत्येक व्यक्ति को एक अनोखा स्वास्थ्य पहचान कार्ड दिया जाएगा जिसमें किसी व्यक्ति विशेष का संपूर्ण मेडिकल रिकॉर्ड समाहित होगा।

आशावादी है। पूरे देश में जनवरी 2021 से राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन प्रारंभ हो जाएगा, जिसके तहत प्रत्येक व्यक्ति को एक अनोखा स्वास्थ्य पहचान कार्ड दिया जाएगा, जिसमें किसी व्यक्ति विशेष का संपूर्ण मेडिकल रिकॉर्ड समाहित होगा।

UNESCO ने मध्य प्रदेश के ओरछा और ग्वालियर को शहरी नियोजन परियोजना के तहत विश्व धरोहर की सूची में शामिल कर रहा है। UNESCO की ये पहल MP Tourism को काफी बल देगा और विश्वस्तरीय बनाएगा।

सिक्किम के पहला 100% जैविक राज्य बनने के चार साल बाद, केंद्र शासित प्रदेशों में लक्ष्यद्वीप को पहला 100% जैविक खेती करने का गौरव प्राप्त हुआ, जहाँ सम्पूर्ण खेती बिना किसी सिंथेटिक उर्वरकों और कीटनाशकों के होगी।

भारत के वास्तुशिल्प चमत्कार में एक और कड़ी जोड़ते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 10 दिसंबर, 2020 को नई संसद की आधारशिला रखी। विकास और तकनीकी क्रांतियों में एक और अनोखी पहल प्रधान मंत्री ने 28 दिसंबर, 2020 को 23 किलोमीटर लंबी Airport Express Line पर राष्ट्रीय सामान्य

गतिशीलता कार्ड (National Common Mobility Card) का उद्घाटन किया; और जनकपुरी एवं नोएडा बॉटनिकल गार्डन के बीच चलने वाली DMRC के Magenta Line पर पहली बार पूरी तरह से स्वचालित और चालक-रहित मेट्रो ट्रेन की शुरुआत की। DMRC वर्तमान में 389 किलोमीटर लंबी मेट्रो लाइन पर प्रचालन कर रहा है और सालाना अमेरिका की दोगुनी आबादी यानी 700 मिलियन यात्रियों का वहन कर रहा है। याद रहे 2002 में देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी ने ही मेट्रो परिचालन की शुरुआत की थी और उसके पहले यात्री थे।

दुनिया की चर्चित पत्रिका TIME ने अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति जो. बिडेन और उप-राष्ट्रपति कमला हैरिस को '2020 Person of the Year' घोषित किया। अमेरिकी राष्ट्रपति के इस चुनाव ने दुनिया के सामने एक नयी पटकथा का मिसाल रखा, जिसने ये साबित कर दिया कि 'सहानुभूति की ताकत' 'विभाजन की उग्रता' से ज्यादा ताकतवर है।

अब अपने देश की ओर लौटे हैं और बात करते हैं पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी की, जिनकी जल्द ही प्रकाशित होने वाली पुस्तक 'The Presidential Years' ने स्व. प्रणब दा के बेटे अभिजीत मुखर्जी और बेटी शर्मिष्ठा को आमने-सामने खड़ा कर दिया है। जहाँ एक तरफ अभिजीत ने प्रणब दा memoir के प्रकाशक Rupa Publications को किताब के 'प्रेरक अंश' को मीडिया से कथित रूप से लीक करने पर आरोप लगाया और आपत्ति जताई है। वहाँ, अभिजीत की बहन शर्मिष्ठा ने खुले तौर पर प्रकाशक का समर्थन किया है।

दिल्ली एनसीआर और आसपास के इलाके में जहाँ लोग पारा 4 से नीचे लुढ़कने से परेशान हैं, वहाँ नये कृषि कानूनों का विरोध कर रहे हजारों आंदोलनकारियों ने दिल्ली सीमा पर एक महीने से अधिक समय से जमावड़ा लगाकर, दिल्ली-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग और कई अन्य मार्गों को अवरुद्ध कर निश्चित रूप से सत्ता के गलियारों में तापमान बढ़ा दिया है। सरकार का प्रयास है कि आंदोलन जल्द समाप्त हो। वह किसानों से सात दौर की वार्ता कर चुकी है। उम्मीद है कि नए वर्ष में यह आंदोलन जल्द समाप्त होगा और सरकार किसानों के हित में आवश्यक संशोधन कृषि कानूनों में करेगी।

पर्यावरण PERSPECTIVE अपने पाठकों से पर्यावरण के प्रति सक्रिय और निष्ठावान रहने और उसके लिए पुरज्ञोर समर्थन देने की वकालत करती है। आप अपनेक्षेत्रों में घटित प्रेरणादायी और सफल कहानियां surabhi.tomar@gmail.com पर हमसे अवश्य साझा करें। पर्यावरण से जड़ी हमारी सारे initiatives को जानने के लिए, कृपया www.paryavaransanrakshan.org पर जाना न भूलें।



(RAJESH K RAJAN)

पंचम नदी महोत्सव

भारतीय चिंतन में है वैश्विक समस्याओं का निदान

समस्या केवल जल या जंगल की ही नहीं बल्कि वायु, पृथ्वी और मूलभूत चिंतन की है सुरेश जी सोनी

पचम नदी महोत्सव के केंद्र बिंदु का विषय रखा है सहायक नदियां। यह केवल सहायक नदियां ही नहीं, उस नदियों के बीच के गांव-गांव में फैली हुई जलधाराओं की दुनिया है, जो एक मौलिक विषय है। जिसके कारण समस्या केवल जल की नहीं है, जंगल की नहीं, इससे आगे बढ़कर हवा, पृथ्वी की है और भारतीय चिंतन। जिसकी आधारभूत विवेचना स्वामी जी ने की। वर्तमान समय में उत्पन्न समस्याओं के निराकरण के लिए चिंतन के स्तर पर, तकनीकी स्तर पर, प्रयोगों के स्तर पर और कैसे क्रियान्वयन हो, इन सबका जो एक व्यवहारिक विवेचन आदरणीय नितिन जी ने कर दिया है। इसके बाद कहने को कुछ नहीं रहता है।

**जल संरक्षण का नियम, मन में लिया उतारा।
जल का नियमन हम करें, शुद्ध करें व्यवहार॥**

उसके मूल मौलिक का जब तक हम परिवर्तन नहीं करेंगे, तब तक हम कितने ही उपाये करें, समस्याएं दिनों दिन बढ़ती चली जाएंगी। इसको रेखांकित करते हुए एक बहुत प्रसिद्ध वार्तालाप पश्चिम में हुआ था। उसका निष्कर्ष एक पुस्तक में छपा है। इसकी विवेचना करते हुए लेखक ने कहा था कि इसकी जड़ के



अंदर सामाजिक दार्शनिक दृष्टि है और वह क्या है, तो उसने उस दर्शन में कहा कि दुनिया उत्पन्न कैसे हुई कि 5 दिनों में उन्होंने उजाले को, अंधेरे को, पृथ्वी को, समुद्र को, जंगलों को, सबको बनाया और छठे दिन उन्होंने पुरुष और स्त्री को बनाया। उन्हें बनाने के बाद भगवान ने कहा कि यह सुंदर दुनिया बनाई है, वह तेरे भोग के लिए है। तब मैंने कहा उसी दिन से गड़बड़ चालू हो गई। मनुष्य धरती का हिस्सा था, एक अंग था, इसमें जो कुछ है वह सब कुछ तेरा है और उसी कारण से संपूर्ण विश्व के अंदर सभी प्रकार की और पर्यावरण से लेकर हर प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। तो उन्होंने पूछा, यह तो चिंतन 2000 साल से है। आज से तो नहीं। पिछले डेढ़ दशक में साइंस और टेक्नोलॉजी ने ताकत उसके हाथ में दे दी है। मशीन के सहारे जो कुछ है, सब कुछ सोचने लग गया और इसी परिणाम है कि आज पर्यावरण के जो आंकड़े रखे जाते हैं, कितने वर्षों में कितने जंगल कम हो गए, कितनी ओजोन परत का क्षरण हो गया, कितनी प्रजातियों को विलुप्त हो गई। जब तक इसको बदलेंगे नहीं संकट बना रहेगा। पृथ्वी में ऐसा लगता है कि समस्या और गहरी हो गई है।

यहां पर भारतीय चिंतन हमारे सामने आता है कि जिस इंसान ने हमको कहा पृथ्वी एक आत्मा है। मानव जीवन आकाश, वायु, अग्नि, जल, और पृथ्वी पंचतत्व से जुड़ा हुआ है। इसलिए संवर्धन और संरक्षण का विचार करते समय पंचतत्वों का विचार करना और उसके साथ जीना आवश्यक है। अगर जीना है तो पंचतत्वों से बनी इस प्रकार की दुनिया में जीना है। दुनिया अस्तित्व रहे, इसका विचार करें। एक दुनिया वनस्पति की है, एक दुनिया पशु-पक्षी और प्राणियों की है, एक दुनिया मनुष्य की है तथा एक दुनिया जिसको हम पहाड़, नदी, झारने, हवा, पानी के रूप में देखते हैं, उसकी है। ये चारों दुनिया एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

दुर्भाग्य से सभ्यता के विकास के साथ-साथ बड़े-बड़े शहरों में मानव को छोड़कर बाकी सारी दुनिया गायब हो रही है। प्राणी की दुनिया और वनस्पति की दुनिया घर के ड्राइंग रूम तक सिमट गई है। जीवनशैली के अंदर इन सभी शक्तियों का इसके संदर्भ में अगर हम विचार नहीं करेंगे, कोई उपाय नहीं होंगे तो उन समस्याओं का कोई समाधान नहीं होगा। इसके संदर्भ में भारतीय जीवन के प्रति व्यवहार में, सृष्टि के संरक्षण के लिए चिंतन करने की आवश्यकता है। इसी के साथ-साथ नदी महोत्सव में जो मुख्य विषय हैं, उन पर चिंतन करने की आवश्यकता है।

दुर्भाग्यवश सभ्यता के विकास के साथ-साथ बड़े-बड़े शहरों में मानव को छोड़कर बाकी सारी दुनिया गायब हो रही है। प्राणी और वनस्पति की दुनिया घर के ड्राइग रूम तक सिमट गई है। अब जरूरत है हमें जीवनशैली पर विचारने की।

ऐसा कहा जाता है कि समस्या जल की नहीं है, जल के नियोजन की है। अब जल का नियोजन सरकारी नीतियों के आधार पर, विभिन्न प्रकार की स्कीम के आधार पर इस प्रकार हो। इससे भी आगे चलकर हमको इस नियोजन पर विचार करना है कि समाज को जल का संरक्षण-संवर्धन कैसे करें।

अनुपम मिश्र जी ने अपनी किताब में लिखा है कि जगह-जगह तालाब सूख गए। धीरे-धीरे खत्म हो गए और उन पर बिल्डिंग खड़ी हो गई। तालाब क्यों समाप्त हो गए। एक शब्द उपयोग करते हैं कि तालाब की मिट्टी जमा हो गई। गाद जमा हो गई। अनुपम जी कहते थे कि तालाब में गाद जमा नहीं हुई, एक सफेदपोश आदमी के दिमाग में गाद जमा हो गई। पहले आदमी को अपने दिमाग में जमा-गाद को हटाना है। पहले आदमी वर्षा आने के पहले तालाब में जमा गाद को हटाता था। उसने वह काम बंद कर दिया। इसलिए तालाब समाप्त हो गए।

अब उन्होंने 'राजस्थान की रजत बूँदे' पुस्तक लिखी, तो उसके अंदर उन्होंने कहा कि विश्व में सबसे कम वर्षा जैसलमेर डेजर्ट में होती है। जहां सदियों तक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंडी लगती थी। 700 साल पहले तालाब बनाया। 3 मील लंबा और 1 मील चौड़ा और 120 मील का ऐरिया। नितिन जी जल नियोजन के बारे में बता रहे थे, जल इकट्ठा होकर तालाब में भर जाएगा, ओवरफ्लो होगा, इससे फिर दूसरा तालाब, फिर तीसरा तालाब, ऐसे एक के बाद एक 9 तालाब तक वह अतिरिक्त पानी जाएगा और उससे भी अतिरिक्त छोटी-छोटी नालियों के रूप में रहेगा। समाज ने जल जहां जमीन का स्पर्श करता है वहां से लेकर जहां-जहां तक रहता है, वहां तक उसका नियोजन करना सीखा। उस समाज ने पानी के साथ जीना सीखा। मुझे लगता है कि संपूर्ण समाज में अपने-अपने गांव, अपने-अपने मोहल्ले, अपनी-अपनी बस्ती उसके अंदर पानी साथ कैसे जीना है, कैसे संरक्षण करना है इस प्रक्रिया के संबंध में मानस बने।

आज की तकनीक जो है, इन तकनीकों का उपयोग करके हमने नई प्रवृत्ति को जन्म दे दिया। यह प्रवृत्ति चली, जो धीरे-धीरे नदियां नालों में बदली, नाले मैदानों में परिवर्तित हो गए। इस प्रवृत्ति को फिर बदल सकते हैं, नदियों को फिर नया जीवन दे सकते हैं। मुझे लगता है कि आंदोलन के माध्यम से, इस कार्यक्रम के माध्यम से, गांव-गांव की जो नदियां हैं, वह पुनर्जीवन प्राप्त करें, उस दिशा के अंदर एक विचार करने की आवश्यकता है। इन चीजों का विचार करते समय आज के समय में इन सारी चीजों के

ऊपर एक विकट संकट विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों के रूप में आ रहा है। वह वेस्टेज कचरे के रूप बना दिया है। आधुनिक संसाधनों से, आधुनिक तरीकों से जल प्रदूषित कर सकते हैं, इस दिशा के अंदर चिंतन करने की आवश्यकता है। कहते हैं हजारों भाषणों से ज्यादा एक जीता जागता उदाहरण प्रेरणा देता है। नर्मदा को निर्मल, अविरल, शुद्ध करने की दृष्टि से एक बहुत बड़ी यात्रा मध्यप्रदेश में हुई। हम उससे संकल्पित हुए हैं। नदी के किनारे वृक्षों को लगाने की बात हुई है, नदी के अंदर किसी प्रकार से प्रदूषण न आए इस संदर्भ में विचार करते हुए मुझे लगता है कि एक जीता जागता उदाहरण आने वाले समय में प्रस्तुत कर सकते हैं। वह इस जीवन को दिशा देगा, क्योंकि कहते हैं कि जल ही जीवन है।

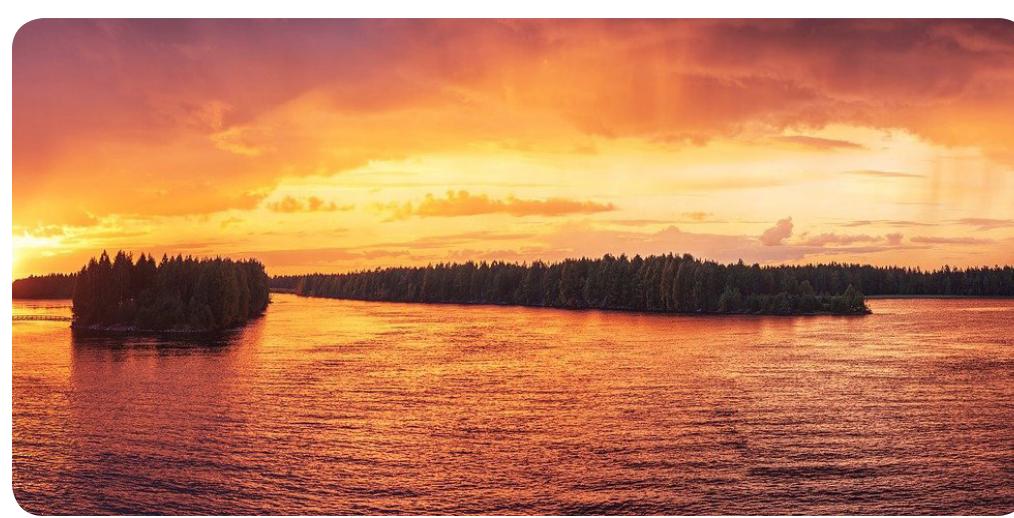
पंचतत्व से हमारा जीवन चल रहा है। यहां विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले लोग और सामान्य जन संपूर्ण चिंतन के साथ उपस्थित हैं। यह चिंतन किसी एक संस्था, सरकार का न होकर हर परिवार का, हर व्यक्ति का रहेगा और विकास की दृष्टि से अपना योगदान करेगा, तब एक समग्र विकास की कल्पना चलेगी। आजकल बात चल रही है कि मनुष्य और पशुओं की बीच असंतुलन हो रहा है। कई बार पशुधन का विचार करते समय मानसिक दृष्टि से विचार करते हैं कि पशु होंगे तो अतिरिक्त आय होगी। मुझे लगता है इससे भी कुछ आगे बढ़कर आज गांव-गांव में इसका विचार करने की आवश्यकता है। पशु नहीं है, इससे भी आगे बढ़कर जो जमीन है उस जमीन की जिंदगी का संबंध पशु के साथ है। घर में जब माता गर्भवती होती है और बच्चे को जन्म देती है, जो शक्ति का क्षण होता है, तो फिर से उसको हम पशुओं से उत्पन्न आहार देते थे।

विश्व के अंदर अमेरिका जैसे प्रगतिशील देशों में लाखों हेक्टेयर जमीन बंजर हो गई, क्यों? वैज्ञानिक एग्रीकल्चर के नाम पर प्रयोग होते गए, लेकिन 50 साल में जमीन के अंदर उपज देने की क्षमता खत्म हो गई। बंजर हो गई। भारत के अंदर जमीन 10 हजार साल से फसल देने में सक्षम रही। जमीन के जीवन संतुलन के लिए वृक्षों के संदर्भ में, पशुओं के संदर्भ में, धरती के संदर्भ में, जल के संदर्भ में इस मौलिकवाद का विचार करते समय आज के समय संतुलन को बिठाने के लिए मैं क्या कर सकता हूं, यह सोच कायम है। हमारा चिंतन तो ग्लोबल है।

तीसरा महत्वपूर्ण विषय रिस्पांस पर्सनली, मेरा क्या रोल है। इस पर विचार करें। इस दो दिन के विचार मंथन में दार्शनिक दृष्टिकोण, मनोविज्ञान की हमारी वृत्ति, हमारे व्यवहार के संदर्भ में हमारी दृष्टि और तकनीकी का उस नाते से उपयोग करते समय समग्र संतुलन को हम आप आगे बढ़ा सकते हैं। इस दिशा में पंचम नदी महोत्सव दिशा दे और मध्यप्रदेश इस विषय के अंदर एक जीता जागता उदाहरण में परिवर्तित हो। उस दिशा में शासन-प्रशासन, समाज, समाजसेवी संस्थाएं सभी लोग साकार करें।

श्री अनिल दवे जी चिंतन करते थे। मुझसे चर्चा भी करते थे और अपनी वसीयत में भी उन्होंने लिखा है। अगर यह होगा तो एक दृष्टि से जो अधूरे सपने उन्होंने देखे, वे सपने भी साकार होंगे, सब बंधु इस पर विचार करें। यह नदी महोत्सव इस विषय के अंदर सार्थक बने।

(नदी महोत्सव 2018 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सह सरकार्यवाह सुरेश जी सोनी का वक्तव्य)



‘सृष्टि’

एक अनूठी पहल

‘सृष्टि’ पर्यावरण का एक पर्याय है

कुमारी स्वाति

‘सृष्टि’ , सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि पर्यावरण से जुड़ी एक पहल है। इस परिवार से जुड़े लोग खुद को एक ग्रीन फैमिली यानी हरित परिवार मानते हैं। इस पहल का जन्म 4 जून, 2020 को हुआ। इसका उद्देश्य है कि हम हर दिन को पर्यावरण दिवस जैसा मनाएं। जब से इसकी शुरुआत हुई है, तब से लेकर आज तक ‘सृष्टि’ ने हर दिन छोटे छोटे पौधे लगाए हैं। इस साल सिंतबर महीने से इन्होंने एक अनूठी पहल शुरू की है। इस पहल के अंतर्गत जो लोग ‘सृष्टि’ के संपर्क में आते हैं, उन्हें उनके जन्मदिवस पर एक पौधा भेंट किया जाता है।

इसके अलावा ‘सृष्टि’ ने ऐसे कई महत्वपूर्ण कार्य किये हैं, जैसे नलबाड़ी इलाके में दीपावली के समय उपयोग किये गए केले के पत्तों को इकट्ठा करके उन्हें मानस नेशनल पार्क और पोबिट्रा नेशनल पार्क के हाथियों को खाने के लिए उपलब्ध कराया।

जागरूकता फैलाने के लिए भी ‘सृष्टि’ कई ऐसे कार्यक्रम का आयोजन कर रही है, जिससे कि लोअर प्राइमरी स्कूल में पढ़ रहे बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाई जा सके।

हाल ही में ‘सृष्टि’ ने Reduce, Reuse और Recycle के उद्देश्य को अंजाम देते हुए लोगों से प्लास्टिक wastes, बोतल और बांस के unused टुकड़े को इकट्ठा कर उस से कूड़ादान बनाने की प्रेरणादायी कोशिश की। हर रोज़ ‘सृष्टि’ परिवार से जुड़े लोग रास्तों से, स्कूल में, होटलों में, कॉलेजों में जो उपयोग

पर्यावरण को बचाना है,
प्लास्टिक को जड़ से मिटाना है।

की गई वस्तुएं हैं, जो फेंक दी जाती हैं, उसे इकट्ठा करने की कोशिश में लगे हुए हैं। जिससे इन वस्तुओं

हाल ही में ‘सृष्टि’ ने Reduce, Reuse और Recycle के उद्देश्य को अंजाम देते हुए लोगों से प्लास्टिक wastes, बोतल और बांस के unused टुकड़े को इकट्ठा कर उस से कूड़ादान बनाने की प्रेरणादायी कोशिश की।

से कुछ अलग बनाया जा सके। जो कूड़ेदान ‘सृष्टि’ द्वारा बनाये जा रहे हैं, उसे स्कूल, कॉलेज, कार्यालय और भीड़ वाली जगहों पर देने की बात चल रही है। इसके अलावा वो प्लास्टिक को जमा करके, सैपलिंग को कवर करने के काम में ला रहे हैं। उनकी इस पहल से वो समाज में यह संदेश देना चाहते हैं कि हम वो सारी चीजें जो हमारे काम की नहीं हैं, जिसे हम फेंक देते हैं, उससे कुछ नया बना सकते हैं।



प्लास्टिक प्रदूषण

एक वैश्विक चुनौती

प्लास्टिक ही वजह है हर साल 1,00,000 जलीय जीवों की मौत का

राजी सिंह

व

र्तमान में प्लास्टिक कचरे का मुद्दा पर्यावरण के लिए विश्व के सामने गंभीर चुनौती बनकर उभरा है। रसायन विज्ञान की ये उपयोगी खोज आज मानवता के लिए ही नहीं, जलीय जीव जंतुओं के लिए भी मीठे विष का काम कर रही है। दरअसल प्लास्टिक प्राकृतिक रूप संवेदनशील नहीं है। इसके पुनः प्रयोग किए जाने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होने के कारण इसने भूमि ही नहीं, बल्कि नदियों और समुद्र को भी पाटना शुरू कर दिया है। एक अध्ययन के अनुसार जीव जंतुओं की लगभग 267 विभिन्न प्रजातियां, जिनमें गाय से लेकर मछली तथा अन्य जीव प्राणी शामिल हैं, प्लास्टिक निगल रही हैं और ये उनके जीवन के लिए एक बड़ा खतरा बन चुका है। अनुमान है कि प्लास्टिक प्रदूषण से प्रतिवर्ष 1,00,000 जलीय जीव मौत के मुंह में जा रहे हैं। वर्ष 2015 में गोमती नदी की मछलियों पर शोध किया गया था। इस शोध रिपोर्ट में उल्लेख है कि प्लास्टिक कणों का मछलियों की प्रजनन क्षमता पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। अब तक किए गए शोधों के अनुसार जीवों के शरीर में पहुंचने के बाद प्लास्टिक रक्त का हिस्सा बन जाता है और कभी बाहर नहीं आता। प्लास्टिक

**धरती की बस यही पुकार
पेड़ लगाओ बारंबार**

तत्वों के शरीर में पहुंचने पर प्रजनन क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

वैसे तो प्लास्टिक कचरा विश्व भर में समुद्र और नदियों के जीवों के लिए चुनौती बना हुआ है। लेकिन हम यहां गंगा नदी के विषय में चर्चा कर रहे हैं।

जीवनदायिनी गंगा देश के एक चौथाई से अधिक क्षेत्र को सुख समृद्धि से हराभरा करती है। देश की लगभग आधी जनसंख्या पानी के लिए गंगा पर आश्रित है। हिमालय से निकलकर बंगाल की खाड़ी में

हिमालय से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरने से पहले गंगा पांच राज्यों के 29 बड़े शहरों, 23 छोटे शहरों और 48 किलोमीटर लंबी यात्रा तय करती है। किलोमीटर लंबी यात्रा तय करती है।

गिरने से पहले गंगा पांच राज्यों के 29 बड़े शहरों, 23 छोटे शहरों और 48 किलोमीटर लंबी यात्रा तय करती है। इसमें से 1000 किलोमीटर सिर्फ उत्तर प्रदेश में आता है। गंगा नदी का बेसिन 8,61,404 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है।

भारतीय संस्कृति में गंगा को माँ का स्थान मिला हुआ है, जो सभी जीव जंतुओं, पशु पक्षियों के साथ हम सब मनुष्यों का भी पालन पोषण करती है। इसलिए इसका संरक्षण करना हम सब का परम कर्तव्य है। पुराणों में गंगाजल को अमृत कहा गया है। गंगाजल केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि रासायनिक दृष्टिकोण से भी विशिष्ट है। आधुनिक भारत में सैकड़ों शोध किए गए हैं, जिनसे गंगाजल की विशेषता सिद्ध हुई है।

अभी 2017 में गंगा के डीएनए विश्लेषण से पता चलता है कि ऊपरी गंगा जल में लगभग 20 से 25 रोगों के रोगाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति है। इनमें 18 रोगाणु प्रजातियां हैं, जिनमें तपेदिक, टाइफाइड और पेट की अन्य कई बीमारियों के रोगाणु शामिल हैं। हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं कि भारत को गंगा जैसी विरासत मिली है। मगर बहुत ही अफसोस की बात है कि हमने गंगा जैसी विरासत की भी कद्र नहीं की। मोक्षदायनी, पतित पावनी गंगा हमारे द्वारा फैलाई जा रही गंदगी और जहरीले रसायनों का बोझ ढोते ढोते स्वयं मलीन हो गई है।

अभी हाल में एक अंतरराष्ट्रीय दल द्वारा एक शोध किया गया। इस दल में वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के विशेषज्ञों सहित अन्य शोधकर्ता शामिल थे। इस शोध की रिपोर्ट जनरल साइंस ऑफ द टोटल एनवायरमेंट में प्रकाशित हुई है। इस शोध में एक चौंकानेवाला तथ्य सामने आया कि मछली पकड़ने संबंधी अनुपयोगी उपकरण नदी में फेंक दिए जाते हैं। इन बेकार हो चुके उपकरणों के कारण गंगा नदी में प्लास्टिक प्रदूषण बढ़ रहा है। यह प्रदूषण लुप्तप्राय प्रजाति के कछुओं ओर गंगा नदी में पाई जाने वाली डॉल्फिन जैसे जलीय जीवों के लिए बहुत बड़ा खतरा है।

दरअसल गंगा नदी पर दुनिया का सबसे बड़ा मत्स्य पालन व्यवसाय होता है। लेकिन इस उद्योग से उत्पन्न होने वाले प्लास्टिक के कचरे तथा जलीय जीवों पर इसके दुष्प्रभाव को लेकर कोई शोध नहीं किया गया। इस अंतरराष्ट्रीय दल ने बांग्लादेश में गंगा नदी के मुहाने से लेकर हिमालय

पर्वत तक सर्वेक्षण किया, जिसमें पता चला कि मछली पकड़ने के अनुपयोगी हो चुके उपकरण सर्वाधिक मात्रा में समुद्र के निकट जमा हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि इन बेकार वस्तुओं में जो सबसे ज्यादा संख्या में पाई गई है, वह मछली पकड़ने की प्लास्टिक से बनी जालियां हैं। स्थानीय मछुआरों से बातचीत करने के दौरान पता चला कि मछली पकड़ने के बड़ी संख्या में अनुपयोगी उपकरण नदी में फेंक दिए जाते हैं। इसका पहला कारण यह है कि इन उपकरणों की जीवन अवधि लंबी नहीं होती, जल्दी ही खराब हो जाते हैं, कट फट जाते हैं या अन्य कोई खराबी आ जाती है। दूसरा कारण इनके निस्तारण के लिए अन्य कोई उचित व्यवस्था उपलब्ध नहीं है। ये लोग इस बात से भी अनभिज्ञ

गंगा जल के DNA विश्लेषण से पता चलता है कि ऊपरी गंगा जल में लगभग 20 से 25 रोगों के रोगाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति है।

है कि प्लास्टिक निगलने से नदी में रहने वाले जीवों को कोई नुकसान पहुंच सकता है। आवश्यकता है कि इन सब लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभाव के विषय में जागरूक किया

जाए।

अधिकतर खतरे का हमारा आकलन इस बात पर केंद्रित रहता है कि इस कचरे में उलझकर विविध जलीय प्रजातियों के जीव धायल हो जाते हैं या फिर मर जाते हैं। लेकिन हमें यह भी समझ लेना चाहिए कि पानी में जमा प्लास्टिक कचरा माइक्रोप्लास्टिक के रूप में बदल जाता है। तत्पश्चात् वह जलीय जीवों के शरीर में पहुंचकर प्लास्टिक अवशेष के रूप में मानवीय खाद्य शृंखला का हिस्सा बन जाता है, जो धीमी गति से अपना दुष्प्रभाव दिखा रहा है। इससे प्रजनन क्षमता और सोचने समझने की क्षमता पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। मोटापा, डायबिटीज और कैंसर के इलाज का निष्प्रभावी होना भी इसके दुष्परिणामों में से एक है।

उत्तराखण्ड के वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया ने गंगा नदी में मिलने वाली 21 प्रजातियों की एक सूची तैयार की है। इस सूची के माध्यम से ही इन जीवों के जीवन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का आकलन किया गया है। शोध के निष्कर्षों से अनुपयोगी वस्तुओं से अन्य वस्तु बना कर कचरे में कमी लाने जैसे समाधान के लिए भी उम्मीद जगती है। प्लास्टिक कचरे से छुटकारा इसे उपयोगी बना कर अन्य जगह इस्तेमाल करने से ही संभव है। हर जीव का प्रकृति संतुलन में महत्वपूर्ण योगदान है। जल जंगल और जमीन जीव जंतुओं के लिए ही नहीं, मनुष्यों के लिए भी प्राण देने वाले हैं। नदियों के स्वच्छ व सवस्थ रहने से ही प्राणियों के अस्तित्व को बचाया जा सकता है। नदियों का स्वास्थ्य निरंतर बिगड़ता जा रहा है। मनुष्य स्वयं इसका सबसे बड़ा कारण है। इसलिए इसके संरक्षण के लिए हम सब को एकजुट होकर कार्य करना चाहिए। नदियों का संरक्षण हम सब की जिम्मेदारी है।



पर्यावरण संरक्षण

भारतीय ग्रंथ देती हैं पर्यावरण संदेश

नदियों की सफाई ओर पर्यावरण को स्वच्छ रखने की जो शिक्षा हमारे ग्रंथों में है, उसे ही हम भूलते जा रहे हैं। पर्यावरण के लिए प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक है

सुरभि तोमर



दियों पुराने हमारे ग्रंथों में और हमारी सनातन परंपराओं में प्रकृति के संग सामंजस्य बनाने और पर्यावरण की रक्षा करने का संदेश दिया गया है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में दी गई शिक्षा की अवहेलना से ही पर्यावरण बिगड़ा है। आज प्रकृति को सम्मान देने की प्रवृत्ति हमारे अंदर समाप्त हो गई है। यदि समाप्त भी नहीं हुई है, तो कम अवश्य हो गई है। प्रकृति के कोप और उसके बिगड़ते स्वरूप से आज समस्त विश्व चिंतित है। ऐसे में भारतीय ग्रंथों में इन सभी समस्याओं का समाधान है। इनमें उल्लेखित मार्गदर्शन विश्व के लिए पथ प्रदर्शक हो सकता है।

हाल ही में भोपाल की मुस्लिम युवती अंजुम परवीन संस्कृत साहित्य में पीएचडी करने के कारण चर्चा में रही। उनके शोध का विषय था पंच महाकाव्यों में पर्यावरण। उन्होंने सातवीं सदी के मध्य लिखे गए

**“सिर सांटे रूख रहे तो भी सस्तो जाण” अथात
सिर काट कर भी वृक्ष की रक्षा की जाए तो वह
सस्ती ही है।**

- बिश्वोई समाज

पांच महाकाव्यों को अपने शोध के लिए चुना। अपने अध्ययन में अंजुम ने पाया कि नदियों की सफाई ओर पर्यावरण को स्वच्छ रखने की जो शिक्षा हमारे ग्रंथों में है, उसे ही हम भूल गए हैं। पर्यावरण को बचाने के लिए बनाई जाने वाली नीतियों के लिए प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक है। पर्यावरण

**पेड़ों को बचाने के लिए एक के बाद एक 363 बिश्वोईयों
ने अपना बलिदान दे दिया। इनमें 71 महिलाएं और
292 पुरुष थे।**

संरक्षण ओर प्रकृति संरक्षण हमारी परंपरा रही है। वृक्ष बचाओ का संकल्प बिश्वोई समाज का चित्र आंखों के सामने ला देता है। बिश्वोई समाज और वृक्ष संरक्षण मानो एक दूसरे के पर्याय हैं। बिश्वोई समाज के 29 नियम हैं, जिनका वह कठोरता से पालन करते हैं। बिश्वोई समाज की मान्यता है, “सिर सांटे रूख रहे तो भी सस्तो जाण” अर्थात् सिर काट कर भी वृक्ष की रक्षा की जाए तो वह सस्ती ही है। इस संदर्भ में हमारे लिए 233 वर्ष पहले घटी एक घटना का वर्णन करना आवश्यक है, जिसमें 363 लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। आज भी बिश्वोई समाज इस दिन को बलिदान दिवस के रूप में मनाता आ रहा है।

1787 में राजस्थान की मारवाड़ रियासत जोधपुर पर महाराजा अभय सिंह का राज था। उनका मंत्री गिरधारीदास भंडारी था। उस समय मेहरानगढ़ किले में फूलमहल नाम के राजभवन का निर्माण किया जा रहा था। इसके लिए महाराजा अभय सिंह ने मंत्री गिरधारी दास भंडारी को लकड़ियों की व्यवस्था करने का आदेश दिया। महल से 24 किलोमीटर दूर एक गांव था खेजड़ली। मंत्री गिरधारी दास अपने सैनिकों के साथ खेजड़ली गांव पहुंच गए। उन्होंने राम खोंड नामक बिश्वोई समाज के व्यक्ति के खेजड़ी के वृक्ष को काटना आरंभ कर दिया। कुलहाड़ी की आवाज सुनकर उसकी पत्नी अमृता बिश्वोई घर से बाहर आई। उसने बिश्वोई समाज के नियमों का हवाला देते हुए पेड़ न काटने का आग्रह किया। लेकिन सिपाही नहीं माने। इस पर अमृता बिश्वोई वृक्ष से लिपट गई और कहा कि पहले मेरे शरीर के टुकड़े होंगे और इसके बाद ही पेड़ कटेगा। राजा के सैनिकों ने उसे पेड़ से अलग करने का बहुत प्रयास किया, लेकिन अमृता टप्पे से मस नहीं हुई। झुँझलाए सैनिकों ने अमृता पर ही कुलहाड़ी चला दी। अमृता के अंग कट कर जमीन पर गिरने लगे, इसके बाद भी उसने गुरु महाराज के बनाए नियमों का पूर्ण रूप से पालन किया। अपनी माता के बलिदान को देखकर उसकी तीन पुत्रियों ने इसी प्रकार बलिदान दे दिया। तत्पश्चात पूरे गांव के बिश्वोई समाज ने पेड़ों को काटने से बचाने के लिए चिपको आंदोलन खड़ा

कर दिया। पेड़ों को बचाने के लिए एक के बाद एक 363 बिश्रोइयों ने अपना बलिदान दे दिया। इनमें 71 महिलाएं और 292 पुरुष थे।

इसकी सूचना जब राजा अभय सिंह को मिली तो वे बहुत व्यथित हुए। उन्होंने गांव में आकर बिश्रोई समाज से क्षमा याचना की। उन्होंने ताप्रपत्र भेट करके बिश्रोई समाज को आश्वस्त किया और वचन दिया कि जिसकी किसी गांव में भी बिश्रोई समाज के लोग रहेंगे, वहां कभी वृक्ष नहीं काटे जाएंगे। यह भाद्रपद शुद्धी दसवीं मंगलवार का दिन था। तब से इस दिन को बलिदान दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। खेजड़ली गांव में विश्रोई

शमी (*Prosopis Cineraria*), United Arab Emirates का राष्ट्रीय वृक्ष भी है जहाँ इसे Ghaf के रूप में जाना जाता है। पौराणिक कथा की माने तो कवि कालिदास ने शमी के वृक्ष के नीचे बैठकर ही ज्ञान प्राप्त किया था। शनिदेव को शांत रखने के लिए भी शमी की पूजा की जाती है। शमी गणेशजी का भी प्रिय वृक्ष है। क्रगवेद के मुताबिक आदिकाल में मनुष्य ने शमी और पीपल की टहनियों को रगड़ कर ही आग पैदा की थी।

समाज का मेला लगता है। इस मेले में बिश्रोई समाज के लाखों श्रद्धालु लोग पहुंचते हैं और बलिदानियों को नमन करते हैं।

ऊपर खेजड़ी वृक्ष का जिक्र आया है। खेजड़ी को शमी वृक्ष के नाम से भी जाना जाता है। यह मूलतः रेगिस्तान में पाया जाने वाला वृक्ष है, जो थार के मरुस्थल एवं अन्य स्थानों पर भी पाया जाता है। इसे अंग्रेजी में prosopis सिनेरिया कहा जाता है। रामायण में भी इसका वर्णन आता है। दशहरे के दिन शमी के वृक्ष की पूजा करने की प्रथा है। मान्यता है कि शमी भगवान श्री राम का प्रिय वृक्ष था। लंका पर आक्रमण करने से पहले उन्होंने शमी वृक्ष की पूजा की थी और उससे विजय होने का आशीर्वाद प्राप्त किया था। कई स्थानों पर आज भी रावण दहन के बाद घर लौटते समय परस्पर शमी के पत्ते स्वर्ण के प्रतीक के रूप में बांटने की प्रथा है। इसके साथ ही कार्यों में सफलता मिलने की कामना की जाती है। महाभारत काल में भी शमी वृक्ष का वर्णन मिलता है। पांडवों ने 12 वर्ष के वनवास के बाद एक वर्ष अज्ञातवास में बिताया था। अज्ञातवास में जाने से पहले उन्होंने अपने सभी अस्त्र शस्त्र इसी पेड़ पर छुपाए थे, जिसमें अर्जुन का गांडीव धनुष भी था। कुरुक्षेत्र में कौरवों के साथ युद्ध में जाने से पहले पांडवों ने भी शमी के वृक्ष की पूजा की थी और

उससे शक्ति और विजय प्राप्ति की कामना की थी। तभी से यह मान्यता हो गई है कि जो भी इस वृक्ष की पूजा करेगा, उसे शक्ति और विजय प्राप्त होगी। कहा गया है कि शमी का वृक्ष शत्रु का विनाश करने वाला एवं विघ्नों को दूर करने वाला और शक्ति को प्रदान करने वाला है, जिसकी पूजा श्रीराम और अर्जुन ने भी की थी।

एक अन्य कथा के अनुसार कवि कालिदास ने शमी के वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करके ही ज्ञान प्राप्त किया था। शमी वृक्ष की लकड़ी यज्ञ की समिधा के लिए पवित्र मानी जाती है। शनिदेव को शांत रखने के लिए भी शमी की पूजा की जाती है। शमी को गणेशजी का भी प्रिय वृक्ष माना जाता है और इसकी पत्तियां गणेश जी की पूजा में भी चढ़ाई जाती है। क्रगवेद के अनुसार शमी के पेड़ में आग पैदा करने की क्षमता होती है। क्रगवेद की ही एक कथा के अनुसार आदिकाल में सर्वप्रथम पुरुषों ने शमी और पीपल की टहनियों को रगड़ कर ही आग पैदा की थी।

भारतीय ग्रंथ संसार को सही दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम हैं। विश्व कल्याण का कार्य भारत ही कर सकता है। हम वसुधैव कुटुम्बकम को मानने वाले लोग हैं। शांति से जीवन जीने का, प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाने का पूरा दर्शन हमारे धर्मग्रंथों में मौजूद है। सभी को इनकी शिक्षा देने की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसी अवधारणा पर चलते हुए हमें विश्व के सामने मौजूद पर्यावरण के संकट को दूर करना होगा। जल जंगल और जमीन ईश्वर की ओर से मिला हुआ वरदान है। इनका उपयोग करने के साथ साथ हमें इनका संरक्षण भी करना है, इन्हें सम्मान देना है। ऐसा ही संदेश हमारे धर्मग्रंथ भी देते हैं। धर्मग्रंथों की अवहेलना ने ही पर्यावरण का स्वरूप बिगाढ़ा है। हमें प्रकृति को सम्मान देना ही होगा। इसी में हमारा कल्याण है।



जलवायु परिवर्तन कोरोना, धुंध और विकास

भारत ने वैश्विक महामारी से लड़ने का एक अनूठा पाठ पढ़ाया है

राणा प्रताप सिंह

जा

दियों से भरी सड़कें, धुंआ उगलते कारखाने और धूल उड़ाते निर्माण शहरों के विकास के जाने पहचाने प्रतीक हैं। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, नई दिल्ली के तत्कालीन आंकड़ों के अनुसार लॉकडाउन के दौरान जब ये गतिविधियां स्थगित थीं, तो उन दिनों वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण में सुधार के अच्छे संकेत मिले। दिल्ली में 22 मार्च, 2020 के दिन वायु गुणवत्ता इंडेक्स (एक्यूआई) 101 से 250 के बीच था। उन दिनों में बड़े प्रदूषणकारी धूल कणिकाओं पीएम 10 की मात्रा में 44% की कमी पायी गयी। लॉकडाउन में अधिक खतरनाक माने जाने वाले सूक्ष्म वायु कणिकाएं पीएम 2.5 की मात्रा में भी कमी अंकित की गयी। इसके अलावा जहरीली गैसों नाइट्रोजन और सल्फर के ऑक्साइडों में भी महत्वपूर्ण कमी अंकित की गई।

वैश्विक अर्थव्यवस्था के वैचारिक विमर्श में जल्दी से धन और साधन पैदा करने के लिए अधिक उत्पादन,

**हाथ मिलाने से बचें, रहें भीड़ से दूर।
कोरोना से जंग में, सजग रहें भरपूर॥**

अधिक खपत को अधिक रोजगार तथा अधिक मुनाफे के सिद्धांतों से जोड़ कर देखा जाता रहा है। भारत जैसी प्राचीन सभ्यताओं के प्रकृति और इसके विभिन्न अवयवों को मां के समान सम्मान देने वाली अवधारणाओं को परे धकेल कर अधिक से अधिक उत्पादन और खपत को ही राष्ट्रीय एवं वैश्विक

किसी भी क्षेत्र में समवेत रूप से शामिल मुख्य वायु प्रदूषकों की मात्रा के आधार पर वहाँ की वायु गुणवत्ता को एक इंडेक्स के रूप में आंका जाता है। वायु प्रदूषण को कम करने के लिए उद्योगों को अपनी चिमनियों में फिल्टर लगाना होता है, विद्युत आपूर्ति के लिए जेनेरेटरों को तेल की जगह गैस से चलाना होता है तथा धुंए को नियंत्रित करना होता है, परन्तु कई बार वे इन मानकों की उपेक्षा करते हैं। जीवाश्म ईंधन से निकलने वाले धुंए के अनेक स्रोत हैं, पर सबसे अधिक और लगातार यह गाड़ियों से निकलता है। वृक्षों और हरे पौधों में इन गैसों को सोखने और पचाने तथा धूलकणों को स्थिर करने की क्षमता होती है, पर शहरों में पेड़ नाम मात्र के हैं। बाजार हैं, बहुमंजिली इमारतों से आच्छादित घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं, गाड़ियों की कतारें हैं, हर तरफ धूल और धुंए के अनेक स्रोत हैं, पर न पेड़ हैं, न बाग, न बनक्षेत्र, न हरे भरे बड़े बड़े पार्क। इसके अतिरिक्त जल प्रदूषण और गुणवत्तापूर्ण पानी की उपलब्धता भी देश की एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। देखना होगा कि राष्ट्रीय और प्रांतीय सरकारों में स्थापित नए जल संसाधन मंत्रालय जल प्रबंधन में क्या नए परिणाम ला पाते हैं।

यूंतो पूरा वैश्व जलवायु परिवर्तन और वैश्विक ऊष्मीकरण की नई चुनौतियों से दो चार हो रहा है, पर भारत जैसे गर्म देश इससे अधिक प्रभावित होने

प्रदूषण से होने वाली बीमारियों को एक बड़ी चुनौती के रूप में पूरे विश्व में खड़ा कर दिया। इन समस्याओं ने वैश्विक पटल पर पर्यावरण संरक्षण और पारिस्थिकीय संतुलन की आवश्यकताओं को तेजी से बौद्धिक एवं राजनीतिक बहस के केंद्र में ला दिया है। पर्यावरण संरक्षण के महत्व को स्वीकारते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2018 में सभी सदस्य देशों को 17 धारणीय विकास लक्ष्यों को अपनी विकास योजनाओं में शामिल करने की सिफारिश की।

किसी भी क्षेत्र में समवेत रूप से शामिल मुख्य वायु प्रदूषकों की मात्रा के आधार पर वहाँ की वायु गुणवत्ता को एक इंडेक्स के रूप में आंका जाता है। एक्यूआई का स्तर शून्य से 50 होने पर हवा की गुणवत्ता अच्छी मानी जाती है। 51 से 100 एक्यूआई वाली हवा संतोषजनक, 101 से 200 वाली मध्यम स्तर की खराब, 201 से 300 वाली खराब, 301 से 400 अत्यंत खराब एवं 401 से 500 एक्यूआई वाली हवा को खतरनाक माना जाता है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार अनेक शहरों में वर्ष के अधिकांश दिनों में वायु प्रदूषण इंडेक्स मानकों से बहुत खराब रहता है।

वायु प्रदूषण को कम करने के लिए उद्योगों को अपनी चिमनियों में फिल्टर लगाना होता है, विद्युत आपूर्ति के लिए जेनेरेटरों को तेल की जगह गैस से चलाना होता है तथा धुंए को नियंत्रित करना होता है, परन्तु कई बार वे इन मानकों की उपेक्षा करते हैं। जीवाश्म ईंधन से निकलने वाले धुंए के अनेक स्रोत हैं, पर सबसे अधिक और लगातार यह गाड़ियों से निकलता है। वृक्षों और हरे पौधों में इन गैसों को सोखने और पचाने तथा धूलकणों को स्थिर करने की क्षमता होती है, पर शहरों में पेड़ नाम मात्र के हैं। बाजार हैं, बहुमंजिली इमारतों से आच्छादित घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं, गाड़ियों की कतारें हैं, हर तरफ धूल और धुंए के अनेक स्रोत हैं, पर न पेड़ हैं, न बाग, न बनक्षेत्र, न हरे भरे बड़े बड़े पार्क। इसके अतिरिक्त जल प्रदूषण और गुणवत्तापूर्ण पानी की उपलब्धता भी देश की एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। देखना होगा कि राष्ट्रीय और प्रांतीय सरकारों में स्थापित नए जल संसाधन मंत्रालय जल प्रबंधन में क्या नए परिणाम ला पाते हैं।



वाले हैं, इसलिये हमारी सतर्कता विशेष प्रावधानों की मांग करती है। हमें गांव, कृषि, शहर, सड़क और उद्योग धंधों के प्रबंधन को लेकर नए सिरे से विचार करना चाहिए। स्मार्ट सिटी की परियोजनाएं सम्भवतः इन समस्याओं का कुछ हल दे पाएं। परन्तु बड़े शहरों के अनियंत्रित फैलाव को लेकर एक पुनर्विचार की आवश्यकता है।

बड़े शहरों के आस पास छोटे शहरों का विकास कर उन्हें सैटेलाइट सिटी और कस्बों के रूप में विकसित कर उन्हें बड़े शहरों के बाहरी हरित क्षेत्रों की तरह एक समावेशी

स्वरूप में संयोजित करना, इस समस्या के निदान की ओर एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। गांव पुरानी सभ्यताओं के पारंपरिक वाहक हैं और भारत की एक बड़ी आबादी अब भी गांवों में रहती है। देश में एक दशक पहले 2011 की जनगणना के समय 6,49,481 गांव अंकित किए गए। हमारी बहुत बड़ी आबादी अब भी गांवों से सीधी या प्रकारांतर से जुड़ी हुई है। यह एक खुला सत्य है कि स्वतंत्रता के सात दशकों बाद भी गांव सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय एवं आर्थिक रूप से अनेक गंभीर समस्याओं से जूझ रहे हैं।

गांवों में न वांछित शिक्षा की व्यवस्था है, न स्वास्थ्य प्रबंधन की। सांस्कृतिक रूप से गांव सहयोग और भाईचारे की पुरानी परंपरा छोड़ चुके हैं। नई वैश्विक आधुनिक चेतना से अपरिचित या अल्पपरिचित हैं। खेतीबाड़ी आज जलवायु परिवर्तन, आपदाओं की बहुलता, प्रदूषण, जल जमाव और बाजार की अनिश्चितता के संकट से जूझ रही है। आबादी बढ़ती जा रही है। रोजगार घटता जा रहा है। खेत बंटते जा रहे हैं। तमाम पुरानी सरकारी योजनाएं दशकों से संचालित होने के बावजूद वांछित परिणाम नहीं ला पायी हैं। नई योजनाओं के उचित परिणाम अभी आने बाकी हैं, पर बड़े बदलावों के लिए अभी बहुत विर्माश, काम तथा प्रभाव आकलन किया जाना है। विकास की अवधारणा को एक समावेशी और सम्यक धारणीय विकास की अवधारणा पर जमीन तक उतारना एक बड़ी चुनौती है, जिसे जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण की समस्याओं ने बहुत जटिल बना दिया है। एक युवा देश के युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा में संयोजित कर आत्मनिर्भर भारत के विकास में बड़े शहरों के साथ छोटे शहरों, कस्बों और गांवों की एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। यह समझना आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं। उनका एक निश्चित मात्रा में पारंपरिक प्राकृतिक व्यवस्था के साथ एक संतुलित पर्यावरणीय पारिस्थिकी में बंधा रहना जरूरी है। इसके बिना पृथ्वी और प्रकृति के साथ साथ मनुष्य के नए धारणीय विकास की परिकल्पना नहीं की जा सकती है। भारत ने एक देश के रूप में इस वैश्विक महामारी में भी धैर्य और सक्षम नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन कर विश्व भर में संयम एवं अनुशासन का अनूठा पाठ पढ़ाया है। भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण हितैषी दर्शन को विश्व के सामने प्रस्तुत कर देश के नेतृत्व को धारणीय विकास की अवधारणाओं को स्थापित करने में भी निर्णायिक पहल करनी चाहिए।

(लेखक बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ में पर्यावरण विज्ञान के प्रोफेसर हैं।)



पी-ब्लॉक 2.0

एक पर्यावरणीय खतरा

गुजरात के बिनीश देसाई, जिन्हें भारत का Recycle Man भी कहा जाता है, ने कचड़े में पड़े मास्क और कोरोना किट्स से बना दी ईंट

अंकुर विजयवर्गीय

भ

रत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया आज कोरोना महामारी से परेशान है। इस महामारी से निपटने के लिए लोगों को अभी भी वैक्सीन का इंतजार है, लेकिन जब तक वैक्सीन नहीं आती तब तक लोगों को मास्क लगाकर और उचित दूरी बनाकर ही इस बीमारी से बचना होगा। लेकिन कोरोना के साथ एक अन्य परेशानी भी अब हमारे सामने खड़ी है। और उसका नाम है, ‘कोरोना वेस्ट’।

मास्क, पीपीई किट और ग्लब्स आदि इस्तेमाल करना हमारी आज की ज़रूरत है, लेकिन डिस्पोज होने के बाद यह सारा वेस्ट लैंडफिल में पहुंचता है, जो पर्यावरण के लिए हानिकारक साबित हो रहा है।

लेकिन इस कचरे के प्रबंधन में अब भारत को नई दिशा दिखा रहे हैं गुजरात के बिनीश देसाई। बिनीश को भारत का रीसायकल मैन कहा जाता है और इसका कारण है कि वे घर और उद्योगों से निकलने वाले वेस्ट यानी कचरे को फिर से इस्तेमाल करके बिल्डिंग मटेरियल बनाने में माहिर हैं।

बिनीश, बीड़ीम नाम की कंपनी के संस्थापक हैं। वह इंडस्ट्रियल वेस्ट को सस्टेनेबल बिल्डिंग मटेरियल बनाने के लिए टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करते हैं। उनका पहला इनोवेशन पेपर मिल से निकलने वाले कचरे को रीसायकल करके पी-ब्लॉक ईंट बनाना था। अब उन्होंने उसी कड़ी में कोरोना वेस्ट जैसे कि इस्तेमाल किए हुए मास्क, ग्लब्स और पीपीई किट से भी पी-ब्लॉक 2.0 ईंट को बनाया है।

लोग ज्यादा से ज्यादा सिंगल यूज मास्क का उपयोग कर रहे हैं। एक बार इस्तेमाल होने के बाद ये मास्क कूड़े के ढेर में शामिल हो जाते हैं। इसलिए मैंने सोचा क्यों न मैं इस वेस्ट से भी ईंट बनाने का काम शुरू करूँ।

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल में सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड द्वारा सबमिट एक रिपोर्ट के अनुसार भारत एक दिन में 101 मीट्रिक टन बायोमेडिकल वेस्ट प्रोड्यूस कर रहा है और ये सिर्फ़ कोरोना से जुड़ा वेस्ट है, इसके अलावा हमारे देश में एक दिन में 609 मीट्रिक टन बायोमेडिकल कूड़ा इकट्ठा होता है।

इस बारे में बिनीश कहते हैं कि लोग ज्यादा से ज्यादा सिंगल यूज मास्क का उपयोग कर रहे हैं। एक बार इस्तेमाल होने के बाद ये मास्क कूड़े के ढेर में शामिल हो जाते हैं। इसलिए मैंने सोचा क्यों न मैं इस वेस्ट से भी ईंट बनाने का काम शुरू करूँ।

पी-ब्लॉक 2.0 नामक इस ईंट को बनाने में 52 प्रतिशत पीपीई मटेरियल, 45 प्रतिशत गीले कागज के स्लज और 3 प्रतिशत गोंद का इस्तेमाल हुआ है। बिनीश के अनुसार बायोमेडिकल वेस्ट से ईंट बनाने की प्रक्रिया वैसी ही है, जैसे वह पेपर मिल के वेस्ट से बना रहे थे। उन्होंने ऐसे पीपीई

इस ईंट का साइज 12 x 8 x 4 इंच है और एक स्क्वायर फुट ईंट बनाने के लिए 7 किलोग्राम बायोमेडिकल वेस्ट का इस्तेमाल हुआ है।

किट, मास्क, ग्लब्स और हेड कवर्स को इस्तेमाल किया गया है, जिन्हें बुनकर नहीं बनाया गया है। उन्होंने इन पर सबसे पहले काम अपने घर में बनी लैब में किया और फिर अपनी फैक्ट्री में कुछ ईंटें बनाईं। जब वह सफल रहे, तो उन्होंने इन ईंटों को एक स्थानीय लैब में टेस्टिंग के लिए भेजा। बिनीश कहते हैं कि महामारी की वजह से हम इन ईंटों को नेशनल लैब में नहीं भेज पाए। लेकिन अभी हाल हीमें हमने एक सरकारी लैब से टेस्टिंग कराई है। प्रोटोटाइप टेस्टिंग में सभी क्वालिटी टेस्ट को पास किया है।

इस ईंट का साइज 12 x 8 x 4 इंच है और एक स्क्वायर फुट ईंट बनाने के लिए 7 किलोग्राम बायोमेडिकल वेस्ट का इस्तेमाल हुआ है। बिनीश का दावा है कि ये वॉटर-प्रूफ भी हैं, ज्यादा भारी भी नहीं है और आग से भी बचाव करती हैं। एक ईंट की कीमत लगभग 2 रुपये 80 पैसे है।



पी-ब्लॉक 2.0 नामक इंट को बनाने में 52 प्रतिशत पीपीई मटेरियल, 45 प्रतिशत गीले कागज के स्लज और 3 प्रतिशत गोंद का इस्तेमाल हुआ है।

इन इंटों को बनाने के लिए बिनीश ने अस्पताल, स्कूल, सैलून, बस स्टॉप और अन्य सार्वजानिक स्थानों से बायोमेडिकल वेस्ट इकट्ठा किये हैं। इसके लिए उन्होंने हर जगह एक इको-बिन रखी है। इन बिन्स में एक मार्क होगा, जो इसके पूरे भरने पर आपको सूचित करेगा।

इसके बाद, लगभग 3 दिनों तक इसे बिना छुए रखा जाएगा। तीन दिन बाद इस पूरे वेस्ट को अच्छे से डिसइंफेक्ट किया जाएगा। इसके बाद इसे छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर इसे कागज की स्लेज और गोंद के साथ मिलाकर इंट बनाई जाती है।

ईको ब्रिक्स

जीवन शैली का बना अभिन्न अंग

असम के काछार और हाईलाकान्दि जिला में ईको ब्रिक्स से बना आंगनबाड़ी केंद्र कविता मिश्रा

आ

सम राज्य में ईको ब्रिक्स का काम इन दिनों तेज गति से चल रहा है। असम के कई एनजीओ प्लास्टिक और पॉलीथीन के प्रयोग को लेकर जागरूकता लाने के लिए काम कर रहे हैं। असम के काछार और हाईलाकान्दि जिला में प्लास्टिक की ईको ब्रिक्स से आंगनबाड़ी केंद्र का निर्माण हो रहा है। जनमानस को जागरूक करने के लिए असम के प्रसिद्ध यूट्यूबर दिम्पु बरुआ की मदद से यूट्यूब पर प्रचार अभियान किया जा रहा है। अब तक 3 लाख से भी ज्यादा लोगों ने इस वीडियो को देखा है।

आज असम के अनेक घरों में ईको ब्रिक्स एक नई धारणा न रह कर, परिवार का अभिन्न अंग बन चुकी है।

अंतरंग युवा संघ और खौज संघ ने ईको ब्रिक्स को घर घर परिचित कराने के लिये स्टेट लेवल ईको ब्रिक्स चैलेंज प्रतियोगिता का आयोजन किया है। इस प्रतियोगिता में घर के प्रत्येक सदस्य के अलावा

**हमें उस परिवर्तन का हिस्सा अवश्य बनना चाहिए,
जो हम दुनिया में देखना चाहते हैं।**
- महात्मा गांधी

वीडियो डिजाइनर, यूट्यूबर, स्टूडेंट तथा एनजीओ भी भाग ले सकते हैं। अब तक काफी लोगों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया है।



हाल ही में आर्टिस्ट गगन बेजबरुआ ने असम के नलबाड़ी जिले के कहुआं रिजोर्ट में ईको ब्रिक्स से एक सेल्फी पॉइंट बनाया है। इस रिजोर्ट में हर दिन 150 से 200 लोग आते हैं।

आर्टिस्ट गगन बेजबरुआ ने असम के नलबाड़ी जिले के कहुआं रिजोर्ट में ईको ब्रिक्स से एक सेल्फी पॉइंट बनाया है। इस रिजोर्ट में हर दिन 150 से 200 लोग आते हैं।



असम के नलबाड़ी जिले के राजेश दत्त बरुआ कई वर्षों से प्लास्टिक पर जागरूकता सभा कर रहे हैं। असम सरकार ने प्रत्येक विद्यालय में एक एक ईको क्लब बनाया है और इस क्लब का उद्देश्य छात्रों में प्रकृति और परिवेश के ऊपर जागरूकता पैदा करना है। असम के हर जिले के विभिन्न एनजीओ के साथ साथ पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के उत्तर और दक्षिण प्रांतों ने जमीनी स्तर पर काफी काम किया है।

हाल ही में असम के छह पत्रकारों को पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के केन्द्रीय स्तर से प्रशिक्षण भी दिया गया है।

विश्व गौरैया दिवस

लुप्त होती गौरैया

हमारी सुबह गौरैया के चहचाहट से ही शुरू होती थी। पर बढ़ते शहरीकरण इस भूरे रंग की पक्षी को विलुप्त करती जा रही है। जरूरत है गौरैया संरक्षण की

कुमारी स्वाति

Jक समय था, जब हम सभी के घरों में भूरे रंग की गौरैया आया करती थी। हम सभी बच्चे कहीं न कहीं इन गौरैयाओं को देखकर बड़े हुए हैं। हमारी सुबह इनकी चहचाहट को सुनते हुए शुरू होती थी। लेकिन बढ़ते शहरीकरण और अनेक स्थानों पर मोबाइल टावर लगने के कारण अब ये विलुप्त होती जा रही हैं। 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस मनाया जाता है। यूरोप में गौरैया प्रजाति की चिड़िया का संरक्षण चिंता का प्रमुख विषय बन गया है, जबकि ब्रिटेन में इस प्रजाति को रेड सूची में शामिल किया जा चुका है। भारत में भी पक्षी वैज्ञानिकों के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में गौरैया की संख्या में उल्लेखनीय गिरावट आई है। गौरैया की लगातार घटती संख्या को अगर हमने गंभीरता से नहीं लिया, तो वह दूर नहीं, जब गौरैया हमेशा के लिए हमसे दूर चली जाएगी। इसके लिए यह हमारी जिम्मेदारी बनती है कि

जैसे परभक्षियों का शिकार बनते हैं।

गौरैया छोटे पेड़ों या चिड़ियों में भी घोंसला बनाती है। लेकिन मनुष्य उन्हें भी काटता-छांटता जा रहा है। वह बबूल, कनेर, नींबू, अमरूद, अनार, मेहंदी, बांस, चांदनी आदि पेड़ों को पसंद करती है। पर अब या तो इन्हें लगाने के लिए जगह नहीं बची है या इतना सब सोचने की फुर्सत हमारे पास नहीं है। शहरों और गांवों में बड़ी तादाद में लगे मोबाइल फ़ोन के टावर भी गौरैया समेत दूसरे पक्षियों के लिए बड़ा खतरा बने हुए हैं। इनसे निकलने वाली इलेक्ट्रोमैग्नेटिक किरणें उनकी प्रजनन क्षमता पर बुरा प्रभाव डालती हैं। इसके अलावा उनके दाना-पानी की भी समस्या है।



हम गौरैया संरक्षण में अपने कदम आगे बढ़ाए।

गौरैया के इस तरह गायब होते जाने के कारणों की पड़ताल की जाए तो हम मनुष्यों की आधुनिक जीवन शैली और पर्यावरण के प्रति उदासीनता इसका सबसे बड़ा कारण नज़र आती है। आधुनिक बनावट वाले मकानों में गौरैया को अब घोंसले बनाने की जगह ही नहीं मिलती। जहां मिलती है, वहां हम उसे घोंसला बनाने नहीं देते। अपने घर में थोड़ी-सी गंदगी फैलने के डर से हम बहुत मेहनत से तिनका-तिनका जुटाकर बनाये गए उसके घर को उजाड़ देते हैं। इससे उसके जन्मे-अजन्मे बच्चे बाहर बिल्ली, कौए, चील, बाज

गौरैया के गायब हो जाने का कारण है मनुष्यों की आधुनिक जीवन शैली और पर्यावरण के प्रति उदासीनता। आधुनिक बनावट वाले मकानों में गौरैया को अब घोंसले बनाने की जगह ही नहीं मिलती।

गौरैया मुख्यतः काकून, बाजरा, धान, पके चावल के दाने और कीड़े खाती है। तथाकथित आधुनिकता उनसे प्राकृतिक भोजन के ये स्रोत भी छीन रही है।

दैनिक जागरण में छपे एक लेख के मुताबिक घरेलू चिड़िया गौरैया को बचाने के लिए कुछ प्रयास हम अपनी तरफ से कर सकते हैं, जैसे- हम अपने घर-आँगन में चावल के दाने बिखरें और मिट्टी के बर्तन में पानी रखें। बगीचे एवं सुरक्षित स्थान पर घोंसले लगायें। साथ ही इनकी सुरक्षा और देखभाल करें। इन प्रयासों से निश्चित तौर पर हम गौरैया की सुरक्षा और संरक्षण की दिशा में एक कदम बढ़ा सकते हैं।

RAJASTHAN

A LIVING LEGEND

LIKHMARAM FROM RAJASTHAN TRAVELED 2800 KILOMETRES JUST TO PLANT TREES AND DISTRIBUTE VARIOUS SAPLING TO 160 VILLAGES

DR. SUBHASH KUMAR

LIKHMARAM ALSO TAKES a pledge to protect the tree after planting them.

It takes a sheer commitment, complete dedication, and tremendous passion to achieve your dream of serving the society. A person who always wants to contribute for the welfare of the society, a gem of a person from Rajasthan has become an inspiration for many. Likharam Budania, a true tree lover who has inspired a lot of people with his work and consistently doing the different campaign he runs and of course his love for the tree.

Likharam started a campaign in August 2020 where he travelled for about 2800 kilometres just to plant and distribute the different kinds of sapling to 160 villages. During his journey, he distributed 2000 banyan trees and seeds of about 80 thousand plants to the people.

Likharam Budania was born in Sola village of Gadoda Gram Panchayat in Sikar district of Rajasthan. Along with spreading awareness on environment related issues among people, he has done well to unite people for intensive plantations. All the campaign started by him has a unique approach which is always appreciated by the common people and easily adaptable.

As per him, the process of tree planting and worshipping has started in family rituals for the past few years in the desert area of western Rajasthan. Not only this, but he has also started a tradition of giving saplings to the guests attending the wedding or any other occasion in the Lakshmangarh tehsil of Rajasthan. The local people are supporting immensely to his campaign and consistently distributing the sapling(s) as the gift to the attendees. Likewise, one of the grooms in the Salasar district has asked 51 fruit trees as the dowry for the marriage. The groom has also taken the pledge to protect the trees like Likharam used to take.

In addition, Likharam runs other campaign too. One of the campaigns he used to run in Chandigarh is 'plastic free campaign' to increase the use of cloth bags instead of plastic bags. Adapting the style of Likharam, many shopkeepers and vendors of Chandigarh have started avoiding the plastic bags.

Recently, the solar power tube wells and drip irrigation projects have been launched in his village, Sola. Under the Watershed Scheme for 15 lakhs, 2000 plants have been planted so far. Several varieties of fruit and shade plants have also been planted including rosewood, neem, guava, tamarind, banyan, among others. As usual, Likharam has taken up the responsibility of taking care of these plants.



AFFORESTATION

SPREADING GREENERY

CUG VC ATTEMPTS TO MAKE THE WORLD A BETTER PLACE FOR OUR FUTURE GENERATIONS

DR. ATANU MOHAPATRA

WHILE SHOWING CONCERN for environment protection, Vice Chancellor of Central University of Gujarat Prof. Rama Shanker Dubey planted trees in its university campus. Discussing the importance of planting trees, he referred to Śrīmad-Bhāgavatam where the almighty Lord Krishna says:

"Friends look at these noble trees, which live entirely for the sake of others, themselves bearing all the rigours of wind, rain, heat, dew etc., but protecting us from them". (Śrīmad-Bhāgavatam 10- 22- 32)

Professor Dubey has always been spreading awareness on environment related issues by his consistent efforts on the same and he is committed to make the world a better place for our coming generation as he says 'clean and green world is a collective moral and ethical responsibility of each citizen and everyone should be inspired to serve the humanity by protecting, conserving the environment.



POLYTHENE

SEEKING POETIC JUSTICE

POLYTHENE, POLLUTION, POISON, CONTAMINANTS, ETC MAKE A HEAVY DENT ON HUMANITY AND ENVIRONMENT

SHRI KANT KULSHRESTHA

Polythene! Polythene! A name of pollutant.
Makes the life hell of every mutant.
Brings contamination wherever it is carried.
Spreads diseases and gets the people worried.

Has chained the whole world in its poisonous grab.
Has gained nothing people while using it.
Feel shame while carrying bags of clothes.
How can they acclaim as the civilized ones?

Alas! Polythene reduces the fertility of land too,
And makes the earth barren.
Where innocent people become the patients of hidden diseases,
As they eat the food mixed with polythene.

As muted ones swallow the tons of polythene,
Leading to the deaths of theirs.
Turning the hazardous atmosphere if are burnt.
Melts never if it is buried.

So, leave the habit of using polythene.
As it appears the worst of times,
But it is the best of times.
Because we still have chance to abdicate polythene.



NIT HAMIRPUR

CHAMPIONING THE CAUSE OF ENVIRONMENT

SANJAY KAMBAL TOOK INITIATIVE TO BLEND ENVIRONMENT WITH TECHNICAL EDUCATION

SUBHI VISHWAKARMA

CULTIVATING THE CULTURE of Environment should start at early age, feels Sanjay Jambal, Assistant Registrar of NIT Hamirpur, who took initiative to blend environment conservation along technical education in his campus.

Being a Paryavaran Sanrakshak, he put forth an idea of making Eco-bricks that too with the help of students as he believes that once the habit of making Eco-bricks enters the younger space, we need not to worry about our planet anymore". Such efforts inspire many people to involve

kids in these types of activities and cultivate the culture of conserving and making better environment right from the very early age.

With this approach, he started it with 8 to 10 students who filled the waste into the bottles and encircled the plants in the campus, though they have a garbage recycling plant in the campus itself but there too plastic pose a huge Challenge as its segregation used to take a lot. Hence, this Eco-bricks is kind of taking away the fuss and now they are left with organic waste only.

Inspired by this effort, they are now planning to make a boundary wall out of these bricks and will try testing the strength of it in near future along with the segregation. They are on the way of collecting the data of consumption of plastic in the campus per day, per week, per month, and finally per year to help researchers.

The modest steps of Sanjay Jambal will surely make a huge difference one day, all of us can also try for the same baby steps around us for the mother nature.



POLLUTION

IMPARTING ETHICAL TOUCH

MAJORITY OF THE ENVIRONMENT-RELATED PROBLEMS MAY BE SOLVED BY THE
‘ETHICS ENGINEERING FOR THE ENVIRONMENT’

MANISH KUMAR

SOMETIMES I FEEL engineers do not like “exceptions”; they gravitate to gape at formula/principle/equation working in every situation in this universe. For them either something does the trick/engender or fails –they don’t indulge themselves in between. Whereas, scientists put effort in understanding why anything works or doesn’t work in an unorthodox manner with all curiosity and fascinations. For them the oeuvre or say output/final resultant is speculative and the processes, mechanism, and factor are of much greater prominence. That’s why they love to smell out exceptions so that the reason(s) for the exceptions may be searched or re-(re)searched. On the other hand, social scientist put efforts to find the actual value of anything you-name-it product/company /thoughts of human being and society. For them “Ethics” has “top priorities” than anything else, followed by human life sustenance and well-being. Exceptions are just part and parcel of the life for them.

What is common in all of them is their wish for clean environment. Everybody loves to have healthy, fresh & invigorating environment. As we all are surrounded by the environment thus, also counters

numerous environmental problems. In fact, any environmental component (atmosphere, lithosphere, hydrosphere, pedosphere, biosphere) has its share of pollution source (common or specific), the reverberations of which can be global, regional or local. According to Nobel Laureate Richard Smalley (1996 Nobel prize in chemistry), water is the second, next to energy, among the humanity’s top ten problems in the next 50 years. Water,

has repeatedly insisted that the single major factor adversely influencing the general health and life expectancy of a population in many developing countries is the lack of ready/unfettered access to clean drinking water. It is projected that by 2020, the number of people living in water-scarce countries will increase from about 131 million to more than 800 million. India, which supports more than 16% of the world’s population with only

Ethics is a discipline that deals with how we value and perceive our environment. It influences our decisions. Environmental ethics is concerned with the moral relationships between humans and the world.

one of the sine-qua-non for life to sustain on Planet Earth, requires proper attention in terms of usage as well as treatments. Sustainable water management in order to meet the relentlessly growing drinking water demand of urban population especially, in the developing countries like India, is among the most indispensable environmental issues.

The World Health Organization (WHO)

4% of the world’s fresh water resources is ‘water stressed’ today and is in all probability be ‘water scarce’ country by 2050. Further, in the present era of precipitous population growth, rapid urbanisation and climate change, the unpredictable frequency and intensity of rainfall makes it difficult to plan any precise water management and storage schemes. Thus, the challenge for scientists and engineers working in the field of water is that

they encounter new problems with each passing day, where the effective use of new techniques, is becoming inevitable.

However, majority of the problem may be solved by the 'ethics engineering for the environment'. With the every fibre of my being I believe that, India's environmental problems including that of water gremlin should be first tackled with 3E's formulae - "Ethics, Engineering & Environment". Ethics are generally which we are born with and learn while dealing with the day to day life/run-of-the-mill job, and fundamental education before streams get divided into majors as science, engineering or humanities.

In general, ethics is a discipline that deals with how we value and perceive our environment. It influences our decision and actions. Environmental ethics is concerned with the moral relationships between humans and the world around us. It puts certain questions like: Do we have special duties, obligations, or responsibilities to other species or nature in general? Are our dispositions towards humans different than towards nature? How are they different? Are there moral laws objectively valid and independent of cultural, context, history, situation, or environment?

One event from the past strikes my mind that happened in my maiden mountain expedition. While studying in Tokyo for my Ph.D, a group of todai (The University of Tokyo) students made a trip to the mount Fuji- Often used as a national symbol for Japan, similar to the Himalaya for India or the great wall for China. After a tedious climbing to the height of 12,389ft, we took easier route to get down (long but not so steep). On the way to return to the camp one of the foreign Ph.D scholar

picked up a stone to keep it as a treasured possession and memory of the place. As the stone in the vicinity of Fuji mount are the product of volcanic activities hence, are very good for cleaning the plantar aspect, especially in south Asia this is popular among women. This event doesn't seem to have anything significant about it and just a dime of a dozen. But as it occurred it was not a bog-standard, as suddenly one Japanese girl student, who was accompanying us on the trip, strongly argued that any stones from there must not be picked and taken by anyone and to immediately leave it where

As ethics has deep correlation with a child's upbringing and education, it must be inculcated from the very beginning at an early age with certain precision and accuracy. Similar to any contemporary engineering design, it is time to do the ethics engineering for clean environment. The immediate effect of doing so will be the termination/slowdown of the rate of further environmental degradation, and once stopped, there will be only way left for the betterment. It is therefore, several nationalist organizations especially, Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) can play a major role in developing such ethics that has to be engineered in such a way that we should not notice while developing it in our conscience, yet it will get obviously noticed

by our surroundings as soon as we will start acting with new drive and senses of environmental ethics.

Author is Faculty at Earth Science, IIT Gandhinagar, India



UTTAM PUBLIC SCHOOL, MEERUT

LEAD KINDLY LIGHT

MAMTA CHAUDHARY TOUCHED THE RIGHT NERVE AND TRIED TO INSPIRE HER SCHOOL STUDENTS TO PUT ENVIRONMENT RELATED THEORETICAL KNOWLEDGE INTO PRACTICE

SUBHI VISHWAKARMA

MEET MAMTA CHAUDHARY of Uttam Public School, Rahwati Meerut who is a teacher by profession but has not limited her teachings to books only and translating the theoretical knowledge in practice by engaging the kids in Environment related activities. She launched her campaign for the protection of environment by collectively making around 500 eco Bricks with the proper contribution of the small kids.

It has been an astonishing experience for them as most of the Eco-bricks are made by these kids. Now these kids are aware about the fact as how to recycle the leftover chocolate, biscuit wrappers!

They are either provided with a separate bottle by the school or are instructed to bring it from home and when the bottle is tightly filled and packed it is collected by the school authorities, the same goes for the neighbours may it be school or school staff neighbours. Thus, they have formed sort of a chain of collection and propagation, now that they have collected too many eco Bricks they are willing to form small structures around the school out of it, like a small lion or deer etc.

At the same time, Mamta ji also wishes to make small toys out of this for nursery students to make students more curious and cautious towards the threat of plastic recycle.

They conduct competitions in which in the name of best out of waste, they have to make something out of these bottles filled with plastics, they either make photo frames or stuffs like that...No one would have ever imagined it will go this simple...!!

Mamta ji has made it possible, she has touched the right nerve and if everything goes well, they will go for online campaigns for the areas nearby, this will keep on doing what they are doing if schools promote it and we will not have to feel the burden of the waste over us anymore.



पर्यावरण PERSPECTIVE



Contact Us At:
9449802157
sanrakshanparyavaran@gmail.com

Don't forget to visit

WWW.PARYAVARANPERSPECTIVE.COM